दुष्यंतकुमार की ग़ज़लो में आशावादी स्वर

डॉ.अमोल पालकर

दुष्यंतकुमार की ग़ज़लो में प्रखर आशावाद प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है । आज सर्वत्र परिवेश चिंताजनक है, लोगों का जीवन दुख–दर्द, निराशा, घुटन, संत्रास और परेशानियों से व्याप्त है । बावजूद इसके परिस्थिति को बदलने का आशावाद दुष्यंतकुमार की ग़ज़लों में अभिव्यक्त हुआ है । दुष्यंत जी इस परिस्थिति को कठिन जरूर मानते हैं लेकिन असाध्य नहीं मानते । वे उसमें बदलाव की, परिवर्तन की आशा जरूर रखते हैं । वर्तमान भयावह परिस्थिति में उनका यह स्वर अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ।
'साये में धूप' दुष्यंत जी का सन् 1975 में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह है । उस समय लगभग पूरा देश अचेत अवस्था में था । पढ़े–लिखे, अनपढ़ सभी चुप्पी साधे बैठे थे और अन्याय–अत्याचार सह रहे थे । ऐसी कठिन परिस्थिति में दुष्यंत जी ने किसी की चापलूसी स्वीकार न कर निस्तेज समाज में विद्रोह की फूंक भर दी और आशा की लहर पैदा की । 'साये में धूप' की ग़ज़लें क्रांति की मशाल बनकर जन–जन में प्रवाहित हो जाती हैं । दुष्यंत केवल दिखावा नहीं करना चाहते । अतः वे कहते हैं–

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,/मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए ।"1 (दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप'– पृ.14)

देश में आज केवल हंगामा खड़ा करनेवालों की संख्या कम नहीं हैं । मंच से लंबे–चौड़े भाषण और आश्वासनों की खैरात बांटी जाती है लेकिन कृति शून्य है । चुनाव से पहले आश्वासन और सपने दिखाकर जनता को ठगाया जाता है और चुनकर आने पर पहलेवाली सरकार को दोषी ठहराने में ही पाँच साल निकाले जाते हैं । इस परिस्थिति पर वे करारा व्यंग्य कसते हैं और निर्णायक सकारात्मकता चाहते हैं । खोखले भाषण, नारेबाजी और प्रवचनबाजी से उन्हें सख्त नफरत थी । राष्ट्रप्रेम के नाम पर घडियाली आँसू बहानेवाले अवसरवादियों से उन्हें चिढ़ थी । मंत्री, अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, नेता, अभिनेता, आदियों को आड़े हाथों लेने के लिए कभी वे चूके नहीं । उनके दंभी व्यवहार की पोल खोल दी है ।
दुष्यंत परिस्थिति में अमूल परिवर्तन चाहते थे । वे जानते थे विवश होकर, हाथ पर हाथ धरे रहने से कुछ नहीं होनेवाला है । हरेक व्यक्ति में क्रांति की भावना पनपनी चाहिए । वे निरंतर चाहते थे कि छुट–पूट परिवर्तन से कुछ होगा नहीं, सूरत ही बदलनी चाहिए । क्रांति की आग निरंतर जलती रहनी चाहिए क्योंकि परिवर्तन तभी हो सकता है जब पूरा देश इस अभियान में सम्मिलित हो । वे कहते हैं–

"मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही, /हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए ।" (दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप'– पृ.30)

यह आग हमेशा के लिए जलनी चाहिए तभी उसमें अनिष्ट तत्व जलकर खत्म हो जाएँगे और सामान्य व्यक्ति का व्यक्तित्व निखर सकेगा । इस आग का बुझ जाना मतलब समाज में निराशा और अंधकार का फैलना है । इसे दूर करने के लिए परंपराओं को तोड़कर आवाज उठानी होगी । इसलिए वे कहते हैं–

"लपट आने लगी है अब हवाओं में, /औसारे और छप्पर फेंक दो तुम भी ।" (दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप'– पृ.33)

यहाँ दुष्यंत ने परिवर्तन को कलात्मक ढंग से लिया है । 'औसारे' और 'छप्पर' जैसे प्रतीकों को रूढ़ी–परंपरा के रूप में प्रयोग किया है । उन्हें तोड़ने के लिए प्रतीकों का आधार लिया है । परिवर्तन की लहर आने पर हमें कम से कम उसका साथ तो देना चाहिए । ऐसे वक्त व्यक्ति अपनी बेड़ियाँ तोड़कर उसमें शामिल हो ले ।

"जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले/मरे तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए ।" (दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप'– पृ.13)

यहाँ 'गुलमोहर' का प्रतीक रूप में उपयोग कर राष्ट्र एवं स्वदेश के प्रति वफादारी और मर–मिटने की भावना प्रकट की है । अपनी वतन–परस्ती दिखाई है । दुष्यंत आशावादी हैं । अतः संघर्ष करते रहना और झुझना वे जीवन का अंग मानते हैं । लेकिन अविरत संघर्ष करते रहने के बावजूद भी अगर सफलता न मिले तो? हौसला बनाए रखने के लिए वे लिखते हैं दृ

"दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियाँ के नाम पर,/और कुछ हो या न हो, आकाश–सी छाती तो हैं।" (दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप'– पृ.16)

दुष्यंत ने आशा का दीप हमेशा जलाए रखा । परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो उन्होंने लड़ना सिखाया । झुकना तो दूर आँख बंद कर परिस्थिति को सहना भी उन्हें पसंद नहीं है । वे परिस्थिति से लोहा लेना सिखाते हैं । दुष्ट, भ्रष्टाचारियों के साथ मिलकर स्वार्थ न देख उनसे लड़ना सिखाते हैं –

"जरा–सा तौर–तरीकों में हेर–फेर करो,/तुम्हारे हाथ में कालर हो आस्तीन नहीं ।" (दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप'– पृ. 64)

दुष्यंत को श्रद्धा थी कि एक न एक दिन परिस्थिति में अवश्य परिवर्तन होगा । रात की यह कालिमा दूर होगी और आत्मविश्वास के आतंरिक बल पर आदमी मुसीबतों का यह प्रचंड सागर पार कर सकेगा । संकटों को देख उन्हें विश्वास नहीं हारना है ।

"एक दरिया है यहाँ पर दूर तक फैला हुआ,/आज अपने बाजुओं को देख, पतवारे न देख ।" (दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप'– पृ.31)

दुष्यंत प्रचंड आशावादी थे । उनमें जोश था जो जीवन में शक्ति भर देता है । वे चाहते थे कि मानव कभी न हारे वह अविरत संघर्ष करता रहे । साहित्यकार का यह आशावाद अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । वे स्वयं आजीवन परिस्थिति से लड़ते रहे, दुख–दर्द